thearyasamaj.org

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425 सृष्टि संवत् 1960853115
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2013-15 विक्रम संवत् 2071
दयानन्दाब्द 191

॥ ओ३म्॥

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

E-mail : aryapsharyana@gmail.com दूरभाष : 01262-216222 सम्पादक : मा० रामपाल आर्य

विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर

वर्ष : 11 अंक : 23 रोहतक, 14 नवम्बर, 2014 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

महर्षि का जीवन प्रेरक एवं मार्गदर्शक है

❑ खुशहालचन्द्र आर्य, 180 महात्मागांधी रोड, (दो तल्ला) कोलकाता-7

मैंने पहले एक लेख आदरणीय डॉ. महेश विद्यालंकार की पुस्तक **'ऋषि दयानन्द की अमर गाथा'** शीर्षक से लिखा था। उस लेख में एक लेख और इसी पुस्तक से लिखने की लिखी थी, सो दूसरा लेख इसी भांति है।

ऋषिवर दया, करुणा और मानवता के सागर थे। वे सदा गाली देने वाले को फल व मिठाइयाँ, जहर देने वाले को क्षमा दान तथा विरोधियों को सम्मान देते थे। वे कभी अपने सुख-दु:ख के लिये न चिन्तित हुए और न रोये, मगर देश, धर्म, जाति की दुर्दशा, नारी की दुर्गति और देश में फैले हुए अज्ञान, ढोंग, पाखण्ड, गुरुडम पर निरन्तर व्यथित होते रहे और उसे दूर करने के लिए संघर्ष करते रहे। उन्हें सदा यही पीड़ा व्यथित किये रहती थी—भारत पुनः जगद्गुरु के गौरव पद पर कैसे प्रतिष्ठित हो? धर्म, भक्ति तथा परमात्मा के नाम पर फैली हुई मनघड़न्त पोपलीलाएं कैसे दूर हों? इन झूठे पाखण्डी गुरुओं, महन्तों, सन्तों आदि की इन भोली-भाली जनता को बहकाने, ठगने की प्रवृत्ति पर कैसे विराम लगे? देश सत्य ज्ञान एवं विद्या के प्रकाश से प्रकाशित होकर, कैसे दु:ख, दैन्य, निर्धनता, रोग-शोक, पथुता आदि से मुक्त हो। ऋषि की मार्मिक पीड़ा यही रही है—

इक हूक-सी दिल में उठती है,
इक दर्द जिगर में होता है।
हम रात को उठ कर रोते हैं,
जब सारा आलम सोता है॥

ऋषि सदा देश के दुर्भाग्य, दुर्गति, कलह, पतन एवं परस्पर की फूट पर रोये। जो देश कभी शान्ति-सुख, मानवता और धन-धान्य का भण्डारी था। आज वह कितनी दीन-हीन अवस्था में है। यह पीड़ा उन्हें सदा बेचैन रखती थी। एक दिन प्रयाग में स्वामी जी गंगा के किनारे बैठे हुए प्राकृतिक सौंदर्य का आनन्द ले रहे थे, उन्होंने देखा—एक माता मरा हुआ बच्चा हाथों पर उठाये हुए गंगा में प्रविष्ट हुई, कुछ गहरे पानी में जाकर उसने बच्चे के शरीर को लपेटा हुआ कपड़ा उतार लिया, रोते-बिलखते हुए बालक के शव को उसने पानी में प्रवाहित कर दिया। ऋषि इस हृदय विदारक दृश्य को देखकर अपने को संभाल नहीं सके। करुणा स्वर से बोले—हाय! हमारा देश इतना निर्धन हो गया है कि मृतक शरीर को कफन भी नहीं जुड़ता? उनकी आँखों से आँसुओं की धारा अविरल बहने लगी। कभी यह भारत धन-धान्य, ऐश्वर्य और विभूतियों से भरा-पूरा था। सोने की चिड़िया कहलाता था, आज देश की यह दयनीय दशा है? वे देश की निर्धनता तथा दुर्दशा पर घण्टों चिन्तन-मनन करते रहे।

ऋषि दयानन्द ने देशभर का भ्रमण किया, उन्होंने व्यक्तित्व, वाणी तथा लेखनी से सभी को प्रभावित किया। जिधर से निकले, उधर ही वैचारिक क्रान्ति, सत्य तथा वेदानुकूल विचारों की छाप छोड़ते गये। अनेक राजे-महाराजे, धनी-मानी उनके शिष्य बन गये। बड़े-बड़े धुरन्धर विद्वानों से उनके शास्त्रार्थ हुए। सभी उनकी विद्या, बुद्धि तथा तेज और बल से प्रभावित थे। उन्होंने दुनिया को झुकाया, पर स्वयं नहीं झुके। दूसरों को बदला, स्वयं नहीं बदले। जो भी उनके संपर्क में आया, उसके विचारों और जीवन का कायाकल्प हो गया। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व में अद्भुत चुम्बकीय आकर्षण शक्ति थी। घोर शत्रु भी उनके सामने नतमस्तक हो जाते थे। वे दिव्य गुणों के खान थे। उनका सम्पूर्ण जीवन प्रेरक, आदर्श, शिक्षाप्रद और नवजीवन दायक था। उनके दिव्य जीवन से न जाने कितनों ने अपने जीवन संभाले और ऊपर उठे। प्रेरक घटनाओं, बातों और उपदेशों से इतिहास भरा पड़ा है। ऋषि का जीवन दर्शन हमारे लिए मील का पत्थर है।

भोगी, विलासी, दुर्व्यसनों में फँसे मुंशीराम के जीवन को ऋषि के एक भाषण ने बदल दिया। उनके जीवन ने ऐसी करवट बदली कि वे मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानन्द बन गये। स्वामी श्रद्धानन्द ने देश, धर्म, जाति के लिए जो प्रेरक कार्य किये हैं, वे हमेशा स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेंगे। यदि हम जीवन उत्थान, निर्माण तथा देश, धर्म, जाति आदि की सेवा का पाठ व शिक्षा लेना चाहें तो स्वामी श्रद्धानन्द से बढ़कर कोई प्रेरक जीवन न मिलेगा।

मुंशीराम की तरह ही अमीचन्द का जीवन भी बुराइयों तथा दोषों से भरा हुआ था। किसी सभा में ऋषिवर के प्रवचन से पूर्व उन्होंने भजन सुनाया। भजन बड़ा ही मधुर था। लोगों ने अमीचन्द के बारे में ऋषिवर को बता रखा था। सहज ही ऋषि जी की सत्यवाणी निकली—अमीचन्द! तुम हो तो हीरे मगर कीचड़ में फँसे हो। इस प्रेरक व प्रभावी वाक्य ने अमीचन्द के जीवन को पलटकर रख दिया। बाद में इसी अमीचन्द ने भजनों के माध्यम से आर्यसमाज का बड़ा प्रचार व प्रसार किया। ऋषि की वाणी और नजर में एक अद्भुत जादू था, जो सिर पर चढ़कर बोलने लगता था। मृत्यु का अन्तिम दृश्य-ऋषि की सहनशक्ति, आस्तिकता, प्रभुभक्ति, मृत्यु से निर्भयता आदि को देखकर नास्तिक गुरुदत्त आस्तिक बन गये। उनके विचार बदल गये। उन्होंने सारा जीवन ऋषि मिशन को समर्पित कर दिया।

पण्डित लेखराम, ऋषि के जीवन और विचारों पर इतने दीवाने हुए कि सारा जीवन आर्य मुसाफिरी में गुजार दिया। ऋषि मिशन पर बलिदान होकर आर्यजनों का संदेश दे गये—तकरीर और तहरीर का काम बन्द न होने देना।

महात्मा हंसराज ने सारा जीवन सादगी, त्याग, सेवा और फकीरी में रहकर ऋषि मिशन को समर्पित कर दिया। ऋषि के जीवन चरित्र को देखकर न जाने कितने दीवाने, मस्ताने और जुनून वाले बने हैं, उन सभी को स्मरण करना सीमित स्थान में सम्भव नहीं है। उन सभी के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं योगदान को स्मरण व नमन।

ऋषि के जीवन की अनेक प्रेरक उदाहरण, घटनाएँ व बातें हैं, जो आज के जीवन और जगत् को संभलने, सुधरने व ऊपर उठने की शिक्षा व प्रेरणा देती हैं। स्वामी जी का जीवन खुली किताब था। उनकी कथनी और करनी एक थी। उन्होंने जो कहा उसे कर दिखाया। प्रभु विश्वास तथा सत्य उनके जीवन का आधार था।

महर्षि दयानन्द जी ने जीवन भर गलत बातों, ढोंग, पाखण्ड, मूर्तिपूजा, अवतारवाद, अन्धविश्वास आदि से कभी समझौता नहीं किया। यदि किया होता तो वे उन्नीसवीं शताब्दी के सबसे बड़े भगवान् होते। उनका व्यक्तित्व अद्वितीय गुणों तथा यौगिक सिद्धियों से परिपूर्ण था। मगर वे इतने महान् व निरहंकारी थे, सदा साधारण मानव बनकर ही अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत किया। हम आर्यजन स्वार्थ, लोभ, पद आदि के लिए कदम-कदम पर सिद्धान्त विरुद्ध बातों से समझौता करने के लिए तैयार हो जाते हैं। असत्य बातों से आत्मा को पतित कर लेते हैं। हमें ऋषि के प्रेरक जीवन से शिक्षा व सत्यपालन का व्रत लेना चाहिये।

thearyasamaj.org

बिना विचारे कोई कार्य न करें

❑ लालचन्द चौहान, # 591/12, पंचकूला (हरयाणा)

क्योंकि कहावत है-**'बिना विचारे जो करे, सो पीछे पछताय'** जो हितकारी कार्य हैं, पहले उन हित के विषय में विचार करें, बिना विचारे कोई काम न करें। प्रथम विचार करना चाहिए कि इस कार्य को करने में क्या लाभ है और न करने में क्या हानि? इस प्रकार विचार करके निश्चय करें कि कार्य करें अथवा नहीं। कुछ कर्म स्वाभाविक करने योग्य नहीं होते, उसी प्रकार उन कर्मों को भी न करें जिनमें किया पुरुषार्थ व्यर्थ हो जाता है। जो कार्य अपने को सुख देने वाला तथा दूसरों के लिए भी हितकारी हो, वह कार्य करने योग्य है।

अर्थ-अर्थ अथवा धन की आवश्यकता जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त होती है। अर्थ की कामना करते समय धर्म को ही पहले रखें अर्थात् धर्मानुसार ही अर्थ का सृजन करें क्योंकि धर्म से अर्थ कभी अलग नहीं होता, जैसे स्वर्ग से कभी अमृत अलग नहीं होता। जिस व्यक्ति की आत्मा पाप कर्म से अलग है और शुभकर्मों में लगा है उसने प्रकृति और विकृति रूप सारे संसार को समझ लिया है।

मनुष्य सदा अनुचित कार्य से डरे, योग्य काम का कभी त्याग न करे, समय से पूर्व विचार करना व्यर्थ है, समय आने पर ही वृक्ष फल देता है। जो व्यक्ति आत्मा और परमात्मा को जानकर यथाशक्ति कार्य करता है, वही नित्य धर्म में स्थिर रहता है। एक धर्म ही कल्याणकारी है, अधर्म पर चलने वाले पापी और प्रजा की रक्षा के लिए युद्ध न करने वाले राजा को भूमि ऐसे निगल जाती है, जैसे चूहे को सर्प खा जाता है।

बुद्धि से विचारने की बातें—

छः तरह के व्यक्ति छः प्रकार के अन्य व्यक्तियों से जीविका चलाते हैं। चोर-आलसियों से, वैद्य-रोगियों से, याज्ञिक-यजमानों से, बुद्धिमान्-मूर्खों से, पण्डे-मूर्तिपूजकों से, ज्योतिष-धन के लालचियों से अपनी जीविका चलाते हैं।

छः प्रकार के व्यक्ति प्रायः अपने ऊपर उपकार करने वालों की उपेक्षा कर देते हैं। आचार्य की पढ़ाई के बाद-शिष्य, माता को विवाह होते ही पुत्र, कार्य सिद्ध होने पर-कार्य साधक को, कामेच्छा समाप्त हुआ पुरुष-स्त्री को, जल से पार होने पर-नौका को, ठीक हो जाने पर रोगी-वैद्य की उपेक्षा करते हैं।

छः प्रकार की प्रवृत्ति वाले लोग सदा दुःखी ही रहते हैं—ईर्ष्या करने वाला, दूसरों की उन्नति को देखकर जलने वाला, असन्तुष्ट-कितना भी धन-दौलत हो जाये परन्तु वह कभी सन्तुष्ट नहीं होता, क्रोधी-व्यर्थ में दूसरों पर क्रोधित होना, शंका करने वाला-शंकी अपने घर को बरबाद कर बैठता है, उदाहरणतः पति-पत्नी एक दूसरे को शक की दृष्टि से देखने लग जायें तो घर नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है और पराजित (असफल) पराजित या असफलता मानव की कमजोरी के कारण होती है और सबसे बड़ी कमजोरी आत्मबल का न होना, आत्मबल कब कमजोर होता है, जब कोई आत्महीनता का कार्य करता है और आत्मबल कब आता है जब आत्मा में परमात्मा की विद्यमानता को जान लेता है और परमात्मा की आज्ञा का कभी उल्लंघन नहीं करता। जब मनुष्य किसी पाप कर्म को करने का मन में विचार लाता है तो ईश्वर की ओर से आत्मा को संकेत मिलता है, पाप कर्म है मत करो, आत्मा में कंपन होती है। वह परमात्मा की ओर से उस पाप कर्म को न करने का संकेत है, परन्तु मनुष्य काम, क्रोध, लोभ, मोह के वशीभूत होकर उस दुष्कर्म को कर बैठता है। यही ईश्वर की आज्ञा का उल्लंघन है।

दस प्रकार के व्यक्ति धर्म को नहीं जानते

शराबी-कहते हैं, शराब अन्दर अकल बाहर, शराबी किसी भी दुष्कर्म को कर सकता है, उसका धर्म से कोई वास्ता नहीं।

विषयों में रत-कामुक व्यक्ति कामवासना में इतना गिर जाता है कि कुछ कहा नहीं जा सकता, लिखने में लिखने वाले को शर्म आती है, परन्तु कामुक दुराचारी को दुराचार में कोई शर्म नहीं आती।

पागल-पागल तो पागल है, बुद्धिहीन ही पागल होता है, वह कुछ भी कर सकता है।

थका हुआ-धन का लालची, धन की लालसा में भागते-भागते जब थक जाता है तो वह चोरी, लूट-खसोट के धन्धों पर उतर आता है।

क्रोधी-क्रोधी सदैव क्रोध की अग्नि में जलता रहता है, वह दूसरों को हानि पहुंचाने में जरा भी संकोच नहीं करता।

भूखा-भूखा कुत्ते के मुंह में से भी रोटी छीनकर खा जाता है। भूखी कुतिया अपने बच्चों को भी खा जाती है।

जल्दबाज-एक रात में करोड़पति बनने की इच्छा, कितनी कम्पनियां धन दुगना करने का लालच देकर जनता को लूट ले गई। जल्दबाज जो बुद्धि से नहीं सोचते, धर्म की कमाई में विश्वास नहीं रखते वे अपने धन को भी गंवा बैठते हैं।

लोभी-चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाय। सारे जीवन कमाते-कमाते मर जाते हैं, न पेट भर खाना खाते हैं, न अच्छे कपड़े, रहन-सहन कर पाते हैं। किसी को दान नहीं देते, ब्याज पर धन देकर ब्याज पर ब्याज कमाते हैं।

डरा हुआ-डरा हुआ धर्म को छोड़ देता है। इसका इतिहास साक्षी है।

पाखण्डी पण्डित-अपनी आजीविका चलाने के लिए धर्म को छोड़ अधर्म का पथ पकड़ लेता है, स्वयं तो अपने भविष्य को बिगाड़ता है, लोगों को भी दुःख सागर में धकेल देता है।

जो व्यक्ति आपत्ति आने पर विचलित नहीं होता और उत्साह पूर्वक कार्यों को करता है, समय आने पर दुःखों को सहन करता है, वही सभी कार्य करने में समर्थ होता है, उसके सभी शत्रु जीते हुए होते हैं। अर्थात् वह किसी भी आपत्ति में अपना सन्तुलन नहीं खोता। जो व्यक्ति शान्त हुए वैर को फिर नहीं बढ़ाता, धन-दौलत का घमण्ड नहीं करता, अपने स्वाभिमान को कभी नहीं खोता, दरिद्रता आने पर भी धर्म को छोड़ अधर्म से धन अर्जित नहीं करता। किसी प्राणी को कष्ट न पहुँचाने का कभी मन में विचार तक नहीं आने देता, अपने सुख में प्रसन्न नहीं होता, दुःख में दुःखी नहीं होता, दूसरे को दुःखी देखकर खुश नहीं होता, दान देकर पश्चात्ताप नहीं करता वह पुरुष सत्पुरुष कहलाते हैं।

जो आचार-व्यवहार अपने अनुकूल न हो, उसे अन्य मनुष्यों के प्रति न करें, संक्षिप्त में यही धर्म है इससे भिन्न अधर्म है। संसार में धर्म नित्य है, दुःख-सुख तो अनित्य है, जीव भी नित्य परन्तु इसके बन्धन का कारण अनित्य है, इसलिए अनित्य कारण को छोड़कर विचारशील व्यक्ति को सदा नित्य धर्म में सन्तुष्ट होकर स्थिर चित्त रहना चाहिए जिसके पास अरबों करोड़ों की सम्पत्ति है, वे भी जीते हैं और जिनके पास सौ रुपये हैं, वे भी जीते हैं, जिनके पास धन-दौलत नहीं वे भी जीते हैं। जैसे भिखारी भी भीख मांगकर अपना पेट भर लेता है। देश में भीख मांगना तो कानूनी जुर्म है, परन्तु यह कुछ लोगों का पेशा बन गया है, इसको रोकने के लिए कोई कानून नजर नहीं आता, कानून की पुस्तक अवश्य अवश्य होगी, जिसमें लिखा होगा कानून की धारा.... के तहत भीख मांगना अपराध है। आत्मा को मारकर, मान-सम्मान को त्याग कर भीख मांगी जाती है, कई तो अंगहीन होते हैं, उनका भीख मांगना तो अलग बात है, परन्तु जैसे शनिदेव के नाम से शनिवार को लाखों भीख मांगते हैं और नींबू-मिर्च देकर लोगों को शनिदेव के भय से मुक्ति भी दिला जाते हैं। इस देश में कोई कितना ही पाखण्ड फैलाये, उसकी कोई रोक-टोक नहीं है। हो भी कैसे? कहावत है—**'यथा राजा तथा प्रजा'**। जब राजा पाखण्ड में विश्वास करने वाला हो तो प्रजा का पाखण्ड में फँसना स्वाभाविक है। दुर्भाग्य इस देश का है कि जिनके हाथ राज सत्ता है, उन्हें केवल कुर्सी पर बने रहने के लिए वोट चाहिए। इसके लिए न तो वह पाखण्ड को रोकना चाहते हैं और न ही देश के अलगाववादियों को, उनका एक लक्ष्य है राजसत्ता को पाना। देश की रक्षा सीमाओं पर तैनात सेना के शूरवीर जवान कर रहे हैं और अधिकतर लोग देश की जनता के धन को और सरकारी खजानों को खाली करने में लगे हैं। बहुत कम लोग हैं, जिन्हें देश की चिन्ता है।

आज देश पाश्चात्य देशों के रहन-सहन, पहनावे और भाषा की नकल कर रहा है, कोई भाषा सीखना बुरा नहीं, अन्य देशों की भाषा भी सीखनी चाहिए। उनकी अच्छाइयों की तरफ कोई ध्यान नहीं, वो देश हमसे उन्नत क्यों हैं? इसकी चिन्ता किसी को नहीं कि हमारा देश उन्नति कैसे करे? जो कार्य देश के विनाश के हैं, वे इस देश में अधिक हो रहे हैं और देश के विकास

शेष पृष्ठ 7 पर....

thearyasamaj.org

* ओ३म् *

सज्जन पुरुष के लक्षण

गतांक से आगे.....

३. **सुदीतिभिः**—जो अपने गुणों से सर्वत्र प्रकाशित हो। गुणों की कीर्ति पुण्य गन्ध के समान दूर-दूर तक स्वयं ही फैल जाती है। शरीर नश्वर है परन्तु गुणों से व्यक्ति चिरकाल अमर बना रहता है। गुणों से ही व्यक्ति गौरव को प्राप्त होता है। महल के ऊपर बैठा कव्वा क्या ऊपर बैठने से गरुड़ बन जाता है। पञ्चतन्त्र में कहा है—

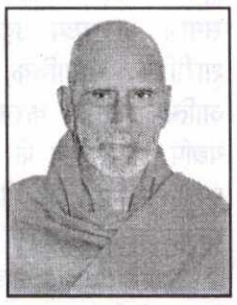

गुणिगणगणनारम्भे न पतति कठिनी ससंभ्रमा यस्य।
तेनाम्बायदि सुतिनी वदवन्ध्या कीदृशी भवति॥

गुणियों की गणना होते समय जिसकी ओर तर्जनी अंगुली अनायास ही न उठे, ऐसे पुत्र से यदि कोई माता अपने पुत्र को पुत्र वाली मानती है तो फिर बांझ किसका नाम है?

विभावसुम्—जिसका धन प्रकाशित अर्थात् नम्बर एक का है, नम्बर दो या काला धन नहीं है। जिसने पूरा कर नहीं दिया हो अथवा अवैध साधनों से धन को इकट्ठा कर उसे छिपा रखा हो उसे सज्जन पुरुष कदापि नहीं माना जा सकता। वह दस्यु या डाकू की श्रेणी में आता है। सज्जन और दुर्जन को लक्षणों से पहचाना जा सकता है—

विद्या विवादाय धनं मदाय शक्तिः परेषां परिपीडनाय।
खलस्य साधोर्विपरीत मेतत् ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय॥

दुर्जन विद्या पढ़कर अभिमानी हो विवाद या कुतर्क करता है उसका धन उसे और गर्वोन्नत बना देता है। वह सीधे मुख किसी से बात ही नहीं करता। यदि दुर्जन शक्तिशाली है तो उसका बल दूसरों को पीड़ा देने में ही लगेगा।

इसके विपरीत सज्जन पुरुषों की विद्या ज्ञान के लिये, धन दान हेतु और शक्ति निर्बल जनों की रक्षा में लगती है। ऐसा व्यक्ति मरकर भी अमर हो जाता है।

(साभार-वेदस्वाध्याय) —आचार्य बलदेव

हरयाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान में दिनांक 8 फरवरी 2015 को 'हरयाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन' का आयोजन किया जा रहा है। आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि वे इस तिथि को अपना वार्षिक उत्सव न रखें। सभी आर्यसमाजों व आर्य शिक्षण संस्थाओं से अधिक से अधिक व्यक्ति सम्मेलन में केसरिया पगड़ी पहनकर तथा वाहन पर आर्यसमाज का बैनर तथा ओ३म् ध्वज लगाकर आयें।

आचार्य विजयपाल मा. रामपाल आर्य कन्हैयालाल आर्य
प्रधान मन्त्री कोषाध्यक्ष
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक-124001

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	आर्यसमाज थर्मल कालोनी पानीपत	14 से 16 नवम्बर 2014
2.	आर्यसमाज बसई जिला गुड़गांव	14 से 16 नवम्बर 2014
3.	आर्यसमाज जीन्द शहर	21 से 23 नवम्बर 2014
4.	आर्ष योग संस्था सैक्टर-76, फरीदाबाद	23 नवम्बर 2014
5.	आर्यसमाज मण्डी डबवाली, जिला सिरसा	12 से 14 दिसम्बर 2014

—सभामन्त्री

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि 'साप्ताहिक' सभी सम्मानित सदस्यों को प्रत्येक मास की 7, 14, 21, 28 तारीख को डाक द्वारा भेजा जाता है। एक सप्ताह तक पत्र न मिलने पर कृपया फोन नं० 01262-216222, 07206865945 पर सूचना दें। धन्यवाद। —व्यवस्थापक

ईश्वर-विषयक प्रश्नोत्तर

❑ स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, संरक्षक-आर्ष गुरुकुल कालवा

यजुर्वेद 23 अध्याय के 51-52वें मन्त्रों में ईश्वर-विषयक प्रश्नोत्तर किये हैं। 51वें मन्त्र में प्रश्न हैं और 52वें मन्त्र में उसके उत्तर दिये हैं।

ईश्वर विषय में दो प्रश्न—

केष्वन्तः पुरुषऽआ विवेश कान्यन्तः पुरुषेऽअर्पितानि।
एतद् ब्रह्मन्नुप वल्हामसि त्वा किꣳस्विन्नः प्रति वोचास्यत्र॥

अर्थ—(ब्रह्मन्) ब्रह्म के ज्ञाता विद्वान्! (केषु) किनके (अन्तः) मध्य में (पुरुषः) सर्वत्र पूर्ण परमेश्वर (आ+विवेश) प्रविष्ट हो रहा है? (कानि) कौन (पुरुषे) परमेश्वर के (अन्तः) मध्य में (अर्पितानि) स्थापित हैं? जिससे हम (उप वल्हामसि) प्रधान पुरुष बनें। (एतत्) यह (त्वा) तुझसे पूछते हैं, वह (किंस्वित्) क्या है? (अत्र) इस विषय में (नः, प्रति) हमें (वोचासि) बतलाइये।

भावार्थ—चारों वेदों के ज्ञाता विद्वान् (ब्रह्मा) से अन्य जन इस प्रकार पूछें—हे वेदों के ज्ञाता विद्वान्! पूर्ण परमेश्वर किनमें प्रविष्ट है? और कौन उसके अन्तर्गत है? यह बात आपसे पूछी है, सो यथार्थता से बतलाइये जिससे हम प्रधान पुरुष बनें।

ऊपर कहे मन्त्र में दो प्रश्नों के उत्तर—

पञ्चस्वन्तः पुरुषऽआ विवेश तान्यन्तः पुरुषऽअर्पितानि।
एतत्त्वात्र प्रतिमन्वानोऽअस्मि न मायया भवस्युत्तरो मत्॥

अर्थ—हे जिज्ञासु! (पञ्चसु) पांच भूतों वा तन्मात्राओं के (अन्तः) मध्य में (पुरुषः) पूर्ण परमात्मा (आ+विवेश) अपनी व्याप्ति से प्रविष्ट हो रहा है, (तानि) वे पांच भूत वा तन्मात्रायें (पुरुषे) पूर्ण परमात्मा के (अन्तः) मध्य में (अर्पितानि) स्थापित हैं (एतत्) यह (अत्र) इस विषय में (त्वा) तुझे (प्रतिमन्वानः) समझाने वाला मैं समाधाता=शंका का समाधान करने वाला हूँ। यदि (मायया) प्रज्ञा=बुद्धि से युक्त तू है, तो (मत्) मुझसे (उत्तरः) उत्कृष्ट समाधान करने वाला कोई नहीं है, ऐसा जान।

भावार्थ—परमेश्वर उपदेश करता है—हे मनुष्यो! मुझसे बढ़कर कोई नहीं है। मैं सबका आधार हूँ और सबको व्याप्त करके धारण करता हूँ। मेरे व्याप्त होने से सब वस्तुयें अपने-अपने नियम में स्थित हैं। हे सर्वोत्तम योगी विद्वानो! आप मेरे विज्ञान को सब मनुष्यों को बतलाओ।

पूर्व मन्त्र में जिज्ञासु के विद्वान् से प्रश्न थे—

हे चतुर्वेदविद् विद्वान् हमें उपदेश कीजिए कि पूर्ण परमेश्वर किन में प्रविष्ट है? और उस पूर्ण प्रभु में कौन-कौन स्थित हैं? कृपया यह हमें यथार्थ रूप से बतलाइये जिससे इसे जानकर हम समर्थ प्रधान पुरुष बनें।

दूसरे मन्त्र में उक्त प्रश्नों के उत्तर—

परमेश्वर उपदेश करता है कि हे मनुष्यो! पांच भूतों एवं तन्मात्राओं में मैं अपनी व्याप्ति से प्रविष्ट हूँ। पांच भूत एवं तन्मात्राएं मुझ में स्थापित हैं। तात्पर्य यह है कि मैं सबका आधार हूँ। मेरी व्याप्ति से ही सब वस्तुयें अपने-अपने नियम में स्थित हैं। इस लोक में तुम्हें प्रत्यक्ष समझाने वाला एवं शंका का समाधान करने वाला मैं हूँ। यदि जिज्ञासु बुद्धि से युक्त होकर मुझसे समाधान चाहता है तो मुझ से उत्तम समाधान करने वाला कोई नहीं। सब योगी विद्वान् लोग परमेश्वर के इस विज्ञान का सब मनुष्यों को उपदेश करें।

महर्षि दयानन्द महाराज ने 'आर्योद्देश्यरत्नमाला' ग्रन्थ में ईश्वर का लक्षण इस प्रकार किया है—

''जिसके गुण, कर्म, स्वभाव और स्वरूप सत्य ही हैं जो केवल चेतन मात्र वस्तु है तथा जो एक अद्वितीय सर्वशक्तिमान् निराकार, सर्वत्र व्यापक अनादि और अनन्त आदि सत्य गुण वाला है और जिसका स्वभाव अविनाशी, अनादि, शुद्ध, न्यायकारी, दयालु और अजन्मादि है। जिसका कर्म जगत् की उत्पत्ति पालन और विनाश करना तथा सर्वजीवों को पाप, पुण्य के फल ठीक-ठीक पहुँचाना है, उसको ईश्वर कहते हैं।''

आर्यसमाज के दूसरे नियम में भी ऋषि दयानन्द जी ने कहा—

''ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।''

thearyasamaj.org

हमारा स्वर्णिम अतीत और देश की अवनति के कारणों पर विचार

❑ मनमोहन कुमार आर्य

गतांक से आगे....

देशभर में वेदों का अध्ययन समाप्त प्रायः हो गया। वेदों के अज्ञानतापूर्ण, मिथ्या व अश्लील अर्थ किये गये। सत्य वेदार्थ लुप्त प्रायः था जब कि वेदार्थ के कुछ ग्रन्थ अष्टाध्यायी, महाभाष्य, निरुक्त व निघण्टु आदि ग्रन्थ कुछ लोगों के पास उपलब्ध थे परन्तु इनका उपयोग नहीं किया जा रहा था। देश व समाज का पतन इस सीमा तक हुआ कि महाभारत काल तक बोलचाल व साहित्य की भाषा सर्वत्र संस्कृत ही थी परन्तु इसके बाद संस्कृत का वर्चस्व समाप्त होकर अन्य अनेक भाषायें अस्तित्व में आ गईं। इन परिस्थितियों के उत्पन्न होने से नये-नये मत यथा बौद्ध, जैन, अद्वैत, द्वैत, शैव, वैष्णव, शाक्त आदि अस्तित्व में आये। विदेशों में भी पारसी या जरदुश्त मत, यहूदी मत, ईसाई मत तथा इस्लाम मत आदि अस्तित्व में आये। यह क्रम चलता रहा और भारत में मतों की संख्या में वृद्धि होती रही। इस कारण संसार में अज्ञान फैल गया और एक ईश्वर की नाना प्रकार से स्तुति व प्रार्थनायें की जाने लगी। ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना के सत्य स्वरूप को जानने का प्रयास ही नहीं किया गया और न अब किया जा रहा है। सब जगह **"अपनी अपनी ढफली, अपना अपना राग"** वाली कहावत चरितार्थ हो रही है। अनेक मत-मतान्तर, मजहब, सम्प्रदाय व पन्थों के कारण समाज में समरसता समाप्त हो गई है। यदा-कदा यत्र-तत्र देश में साम्प्रदायिक दंगे होते रहते हैं। सब अपने-अपने मत को श्रेष्ठ व ज्येष्ठ मानने लगे और हमारे विदेशी मतों ने तो धर्मान्तरण का कुचक्र भी चलाया। ऐसी अनेक घटनायें इतिहास में अंकित है जहां शासक वर्ग व बलवान शत्रु का मत न मानने वालों की हत्यायें कर दी जाती थीं और यह कार्य बहुत बड़े पैमाने पर भारत में हुआ। सभी मतों का आपस में संवाद समाप्त हो गया और सब अपने अपने घर में शेर बन गये। सन् 1825 में महर्षि दयानन्द का जन्म होता है। वह वेदों का अध्ययन करते हैं और बह्मचर्य व योग के आधार पर अपूर्व पुरुषार्थ, तप एवं त्याग से वेदों के सत्य अर्थों को जानते हैं। उन्होंने संसार के सभी मतों का अध्ययन किया और पाया कि सत्य धर्म केवल एक है और वह प्राचीन वेदों का धर्म है जिसे सनातन धर्म भी कहते हैं। उनको इस तथ्य का भी साक्षात हुआ कि विश्व शान्ति के लिए आवश्यक है कि सभी मतों का परस्पर संवाद हो, वार्तालाप, उपदेश, गोष्ठी, शास्त्रार्थ कर सत्य मत का निर्णय किया जाये और उस सत्य मत को सभी स्वीकार करें। उन्होंने अनेक मतों के विद्वानों से संवाद और शास्त्रार्थ भी किए जिसमें वैदिक मान्यतायें हीं सत्य सिद्ध हुईं। बहुत से लोगों ने सत्य को स्वीकार भी किया परन्तु यह स्थिति नाममात्र की ही कही जा सकती है। इस पृष्ठभूमि में अब हम भारत के पतन के कारणों पर विचार करते हैं और उन्नति के कारकों का भी उल्लेख करते हैं।

देश के पतन का पहला कारण तो वैदिक ज्ञान का लोप तथा असत्य व मिथ्या ज्ञान पर आधारित मतों का प्रादुर्भाव रहा जिस कारण देश में सर्वत्र अज्ञान, अन्धविश्वास व कुरीतियां उत्पन्न हो गईं। इसके फल स्वरूप मूर्तिपूजा, मृतक श्राद्ध, स्त्री व शूद्रों को वेदाध्ययन के अधिकार से वंचित करना, अवतारवाद की कल्पना व उसका प्रचलन, फलित ज्योतिष, जन्म पर आधारित जाति व्यवस्था वा आधुनिक वर्णव्यवस्था, छुआ-छूत का प्रचलन, बाल विवाह-अनमेल विवाह व बहुविवाह, सतीप्रथा, मदिरापान, मांसाहार, अशिक्षा, वैज्ञानिक अनुसंधान पर ध्यान न देना, निर्धनों व दुर्बलों का धनिकों व बलवानों द्वारा शोषण व उन पर अत्याचार आदि अनेक पतन के कारण समाज व देश में उपस्थित हुए। यह सब देश में चल पड़ा परन्तु ऐसा कोई व्यक्ति उत्पन्न नहीं हुआ जो इनके विरुद्ध आवाज उठाता। इसका श्रेय स्वामी दयानन्द सरस्वती को मिला जिन्हें उनके गुरु स्वामी विरजानन्द सरस्वती ने असत्य का खण्डन और सत्य का मण्डन कर देश व इसके पुराने सत्य वैदिक धर्म व संस्कृति की रक्षा के लिए प्रेरित किया था। स्वामी दयानन्द जी ने पतन को समाप्त करने और देश व विश्व का कल्याण करने के लिए 10 अप्रैल, सन् 1875 को मुम्बई में प्रथम आर्यसमाज की स्थापना की और इसके 10 स्वर्णिम नियम बनाये जिनमें से एक **"सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये"** है। दूसरा अति महत्वपूर्ण नियम यह है कि **"अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।"** उनकी इस प्रेरणा से उनके प्रमुख अनुयायियों स्वामी श्रद्धानन्द, पं. गुरूदत्त विद्यार्थी, स्वामी दर्शनानन्द, महात्मा हंसराज, पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु आदि ने गुरुकुलों व दयानन्द एंग्लो वैदिक कालेजों का देशभर में विस्तार किया। आर्यसमाज के स्वर्णिम नियमों यह नियम भी हैं कि **"सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिये। मनुष्य को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिये अपितु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिये। समाज का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात शारीरिक, सामाजिक, बौद्धिक और आत्मिक उन्नति करना।"** यह नियम यद्यपि आर्यसमाज के नियम हैं परन्तु इन नियमों का कोई भी विरोधी नहीं हो सकता। इसी प्रकार से ईश्वर के स्वरुप व उसके द्वारा प्रदत्त वेदज्ञान से सम्बन्धित नियम भी देश व काल की सीमा से परे होने के साथ मानवमात्र के लिए हितकारी हैं व जीवन की उन्नति के आधार हैं। जहां यह नियम सरल व सुबोध हैं एवं देश व समाज के लिए लाभप्रद हैं वहीं देश के नाना प्रकार के मतों व अज्ञान तथा अन्धविश्वासों में ग्रसित होने के कारण इनका क्रियान्वयन असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है।

समाज की उन्नत अवस्था वह अवस्था हो सकती हैं जहां किसी के साथ पक्षपात न होता हो और न ही अन्याय। सभी देशवासी शारीरिक दृष्टि से पूर्ण स्वस्थ, सुखी, सम्पन्न व समृद्ध हों। इसके साथ सभी का धार्मिक व सामाजिक दृष्टि से शिक्षित होना भी आवश्यक है। एक ही मत, एक जैसी परम्परायें और एक समान ही सबकी विचारधारा हो। यह उन्नति की स्थिति है और इसके विरीत जो स्थिति हो सकती है वह अवनति की स्थिति या अल्प उन्नति की स्थिति कही जा सकती है। समाज ऐसा हो जहां सभी लोग संसार की सबसे प्राचीन भाषा को बोलना व लिखना जानते हों। हिन्दी का ज्ञान भी सभी देशवासियों को होना चाहिये। इनका जो विरोध करे वह कड़े व तत्काल दण्ड से दण्डित किया जाये। इन दो भाषाओं के बाद क्षेत्रीय भाषा व अंग्रेजी का स्थान होना चाहिये। देश के लिए सर्वत्र एक समान, अनिवार्य व निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिये। वेदाध्ययन अनिवार्य होना चाहिये। वेदों की उपेक्षा सहन नहीं की जानी चाहिये। यहां यह कहना उचित होगा कि वेद किसी मत या पन्थ का ग्रन्थ नहीं अपितु साक्षात् ईश्वर से प्राप्त सब सत्य विद्याओं के ग्रन्थ हैं जिन पर संसार के सभी मानवों का अधिकार है और सबका इसका अध्ययन व पालन करना परम कर्तव्य व मानव धर्म है। सभी अन्धविश्वास व कुरीतियों को सरकारी राजाज्ञा द्वारा निषिद्ध किया जाना चाहिये जिसे वेदों के विद्वान, सभी ज्ञानी, शिक्षाविद व वैज्ञानिक मिलकर तय करें। विरोध करने वालों को उचित दण्ड शीघ्रातिशीघ्र मिलना चाहिये। अज्ञान पर आधारित मतों पर प्रतिबन्ध होना चाहिये। देश में कम से कम सरकारी अवकाश हो। पुरुषार्थ की पूजा हो और पुरुषार्थहीन का असम्मान हो। गुणी लोगों को बिना किसी पक्षपात के रोजगार मिलना चाहिये और अयोग्य को समय-समय पर छानबीन कर उन्हें उनकी योग्यता व स्वभाव के अनुसार कार्य दिया जाना चाहिये। सामाजिक समरसता के लिए भी कानून हो। जो इसमें रुकावट करें वह कोई भी हों, दण्डित होने चाहियें। धन की भी एक सीमा होनी चाहिये। जो अधिक धनी हैं उनकी भी अधिकतम सीमा होनी चाहिये। उससे अधिक धन सरकार उनके कर के रूप में लेकर उससे निर्धनों के कल्याण के कार्यक्रम चलाए जिससे सामाजिक व आर्थिक असमानता कम से कम हो। देश में एक ऐसा वातावरण बनना चाहिये जिसमें त्यागपूर्ण जीवन व्यतीत करने वाले अधिक सम्मानित माने जाने चाहिये और सभी को उनका यथोचित सम्मान करना चाहिये। यदि ऐसा नहीं करेंगे तो राष्ट्र उन्नत न होकर अवनति को प्राप्त होगा। अवनति के जहां अनेक कारण होते हैं वहां मांसाहार व मदिरापान भी आध्यात्मिक एवं भौतिक अवनति का कारण होता है। मदिरापान और मांसाहार सहित सभी प्रकार के नशों से मनुष्य का शरीर निर्बल होकर रोगग्रस्त हो जाता है। उसकी शारीरिक व बौद्धिक क्षमतायें स्वस्थ मनुष्य की अपेक्षा कम होती है। विलासी और व्यसनी मनुष्यों से राष्ट्र को अधिक लाभ नहीं हो पाता जो व्यसनों से रहित देशवासियों से होता है।

अतः शासक व शासक वर्ग को इस दिशा में ध्यान देने की आवश्यकता होती है। इसके साथ देश का सामरिक दृष्टि से भी पड़ोसी देशों से कहीं अधिक बलवान होना अति आवश्यक है। संसार का कोई देश अपनी सैन्य व अन्य किसी शक्ति के कारण हमें अपनी बात मानने के लिए विवश न कर सके, इसलिए हमें उनके समान व अधिक बल व सामर्थ्य देश में उत्पन्न करना आवश्यक है। गोहत्या किसी भी देश के लिए अभिशाप व कलंक होता है। गोहत्या एक प्रकार से राष्ट्र की हत्या के समान है। ईश्वर की दृष्टि में भी यह एक जघन्य अपराध है। एसे नागरिक कभी भी मन की प्रसन्नता, वास्तविक सुख व शान्ति प्राप्त नहीं कर सकते हैं। अवनति के इन कारणों को दूर करने पर ही देश उन्नति कर सकता है। आशा की जानी चाहिये कि भविश्य में यह स्वर्णिम समय अवश्य आयेगा।

196, चुक्खूवाला-2, देहरादून
फोनः 09412985121

thearyasamaj.org

ब्रह्मचर्य के नाश की आजादी

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

आजादी के मायने उद्दण्डता, अनैतिकता लेने से समाज का ताना-बाना छिन्न होकर अनेक बुराइयां फैलती हैं, लेकिन विकृत मानसिकता वाले तथाकथित बुद्धिजीवी इस तथ्य का ध्यान नहीं रखते। इन्होंने निर्विवादित लाभकारी विषयों को भी विवादित बना दिया है। आजकल यह वर्ग ब्रह्मचर्य के नाश की आजादी देने पर तुला है। अभी दिल्ली में संघ कार्यालय के बाहर सबके सामने अनैतिक शारीरिक क्रिया को अंजाम दिया। अब इन्हें कौन समझाए कि शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान जो हितकारी नियम हैं, उनके पालने में स्वतन्त्र रहना चाहिए। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह जो सामाजिक सर्वहितकारी नियम हैं उनके पालने में परतन्त्र रहना चाहिए। अब कोई इनसे पूछे कि क्या हिंसा, झूठ, चोरी, जमाखोरी की किसी को छूट दी जा सकती है? क्या ऐसा करने से समाज की हानि नहीं होगी? साथ ही ब्रह्मचर्य को भी इन्हीं नियमों की श्रेणी में रखा गया है। हमारे वैद्यक ग्रन्थों में सदाचार सम्बन्धी विषय में पति-पत्नी को भी ऐसी क्रियाएं करने के लिए एकान्त स्थान का आदेश है। ये लोग जब कुंवारा, कुंवारी कन्या को एकान्त में चुम्बन (Kiss) की वकालत करते हैं तो ये क्या गारण्टी दे सकते हैं कि ऐसे जोड़े एकान्त स्थान में व्यभिचार नहीं करते होंगे? 'ब्रह्मचर्य' के लाभ या हानि इन्हें कौन समझाए? ऐसे विचारों का संरक्षण ही आर्यसमाज की चुनौती है। कुविचारों से समाज का ताना-बाना भी छिन्न-भिन्न होता है। पड़ोसी की लड़की व लड़के भी एक दूसरे को किस नजर से देखेंगे जब एक ही गांव में विवाह की भी पुष्टि हो रही है। खेद की बात है आज अज्ञानी, हठी, ईसाई मिशनरियों के एजेंटों, सुर्खियों में बने रहने के लालची, संस्कृति हत्यारे लोगों ने ऐसी बातों को भी विवाद का विषय बना दिया है। कहां गये मनु के वे नियम जिसमें ब्रह्मचर्यकाल में स्त्री दर्शन, संग, संभाषण आदि का तो निषेध है ऐसी कुचेष्टा से स्पर्श की बात तो दूर है।

प्राचार्य अभय आर्य

ओ३म्

बतायें दयानन्द क्यों जग में आया, सुनो लाभ क्या उससे भारत ने पाया।
किया फिर से प्राचीन गौरव को जागृत, सकल जग में वेदों का डंगा बजाया।
गये भूल थे नाम तक भी हम अपना, ऋषि ने हमें आर्य कहना सिखाया।
मिटाई सभी कायरता हिन्दुओं की, सुदृढ़, वीर, निर्भीक फिर से बनाया।
समझे थे हिन्दू धर्म अपना कच्चा, दयानन्द आके पक्का बताया।
पाखण्डी विरोधी उठे कांप डर से, सच्चाई का नाद जब उसने बजाया।
किरानी, कुरानी, पौराणिक मठों पर, लगातार तर्कों का गोला गिराया।
मसीहा और मुस्लिम यह समझे ऋषि को, सजा हमको देने खुदावन्द आया।
सभी सत्य के प्रेमियों ने कहा यह, सुख-शान्ति लायक यह सन्देशा लाया।

सत्यार्थप्रकाश महिमा

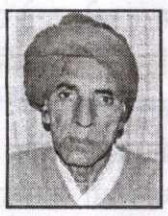

सूबे० करतारसिंह आर्य

सत्यार्थप्रकाश में लिखा सदा सत्य का सार।
जो सज्जन पढ़ते इसे, होते सुखी अपार॥
ब्रह्मचर्य पालक सदा, दयानन्द ऋषिराज।
लिखा सत्यार्थप्रकाश जो, सब ग्रन्थों का ताज॥
दयानन्द महापुरुष थे, किया श्रेष्ठतम काम।
वैदिक अमृत पान का पिला गया जो जाम॥
दयानन्द ऋषिराज थे, साधक बड़े महान्।
'केवल' विनती यूं करे, पढ़ियो वैदिक ज्ञान॥

वैदिक उजियारा हो जाये

सत्यार्थप्रकाश का पढ़ना, यदि जन-जन में प्यारा हो जाये।
पढ़कर सभी अमल करें, वैदिक उजियारा हो जाये।
फूले फुलवाड़ी वेदों की, जग से अंधियारा मिट जाये।
सत्य धर्म पर अमल करें, स्वर्ग सारा जग बन जाये।

चाहो यदि लेना आप जग में सच्चा, परम पुनीत प्रभु भक्ति मकरन्द का।
चाहो तरना जो अघ, अविद्या-अगम-सिन्ध, चाहो करना विनाश दु:ख दैन्य फन्द का।
चाहो भरना जो सत्य ज्ञान से हृदय कोष, चाहो भण्डा फोड़ना पाखण्ड छल छन्द का।
चाहो करना निवृत्ति शंकाओं की तो अवश्य पढ़ो सत्यार्थप्रकाश ऋषि दयानन्द का।

भेंटकर्त्ता : सूबेदार करतारसिंह आर्य, सेवक आर्यसमाज गोहाना मण्डी (सोनीपत)

स्वास्थ्य चर्चा-

डायबिटीज में तीन काम

डायबिटीज मधुमेह या शुगर की बिमारी या यूँ कहें, इस रोग में ऊर्जा, शक्ति, पावर, एनर्जी, का शरीर में उपयोग नहीं हो पा रहा है वह वैसे ही यूरीन के माध्यम से निकली जा रही है। जो निकल नहीं पा रही है वह रक्त में घूम रही है। इस बीमारी को ठीक करने के लिए तीन काम करने हैं। डायबिटीज को तीन तत्त्व ठीक करते हैं—

(1) भोजन-भोजन ऐसा करें जो एकदम ऊर्जा नहीं देवे। तुरन्त ऊर्जा नहीं दे धीमी गति से ऊर्जा देवे। शरीर को जितनी ऊर्जा की जरूरत हो इनसे ग्रहण कर लेवे अनावश्यक नहीं।

जैसे—(1) अंकुरित मूंग, मेथी, मौठ, मटर, सोया, मूंगफली का सेवन करें। (2) मिक्स आटे की रोटी, जौ, ज्वार, बाजरा, मक्का, गेहूं, चना।

ऐसे फल खावें जिसमें डायरेक्ट मिठास नहीं है। जैसे—आंवला, नींबू, जामुन, जामफल, ज्वारा, सेब, अनार, नासपाती, नाग, आलूबुखारा।

ऐसी सब्जियाँ खावें जो सहज पच जावे भारी नहीं हो और गर्मी नहीं करे। जैसे-लौकी, तोरई, ककड़ी, पत्तागोभी, टमाटर, कद्दू, पेठा, परवल।

(2) कसरत-जो खाते हैं उसको पचा नहीं पाते हैं इसलिए कसरतें जरूर करें। डायबिटीज, शुगर, मधुमेह में ऊर्जा शक्ति को ठीक करने के लिए पाचन की क्रिया को अच्छी करना बहुत जरूरी है, इसके लिए उचित कसरतें करें। इससे ऊर्जा का सदुपयोग शरीर में होने लगेगा और यह ऊर्जा ग्लूकोज लीवर पाचक रसों एवं पेन्क्रियाज के सहयोग से ग्लाईकोजन में बदलकर शरीर में नव निर्माण कर सकेगी।

(1) **जोगिंग**-10 मिनट तेज गति या मध्यम तेजी से जोगिंग करें या दौड़ लगावें तथा तेज गति से घूमना लाभकारी होता है।

(2) दण्ड बैठक, सूर्य नमस्कार, तैराकी।

(3) कोई भी फिजिकल गेम्स बास्केटबाल, फुटबाल, क्रिकेट, कबड्डी, खो-खो आदि खेलें।

(4) **योग**-उत्तानपादासन, पवनमुक्तासन, नौकासन, भुजंगासन, पर्वतासन, सायकिलिंग, चक्रासन, शवासन, अर्द्ध मत्स्येन्द्रासन, मण्डूकासन, धनुरासन।

(5) झाड़ू, पोछा, बर्तन, कपड़े धोना, बागवानी, खेती के काम, शक्ति के काम करें, मेहनत करें।

(3) सम्यक् विश्राम-8 से 9 घण्टे की सम्यक् नींद अच्छा भोजन, अच्छी कसरत करने के बाद ही आती है। तनाव, थकान, हताशा, निराशा, कुण्ठा, लाचारी, बीमारी में विश्राम अति आवश्यक है। काम, बोझ कई तरह के टेंशन से मुक्ति के लिए सम्यक् विश्राम जरूरी है। शरीर के अंगों की रिपेयरिंग मेंटेनेंस निर्माण विश्राम की अवस्था में ही होती है। इसलिए शरीर को विश्राम अवश्य दें। ये तीनों काम अच्छी तरह से किये तो डायबिटीज से मुक्ति अवश्य मिल सकेगी।

-डॉ. छैल बिहारी शर्मा, मुख्य चिकित्सक, नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

विदेशी योग सीखने आश्रम आये

दिनांक 2 से 4 नवम्बर 2014 को थाईलैंड निवासी श्री एवम के नेतृत्व में योग सीखने वैदिक योगाश्रम भऊ आर्यपुर, रोहतक आये। विदेश में योग तथा आध्यात्म की शिक्षा प्राप्त करने की रुचि जगी है। आचार्य वेदमित्र जी ने सबसे पहले उन्हें गायत्री मन्त्र सिखाया तथा उसका अर्थ समझाया। इसी प्रकार सब जीवों से श्रेष्ठ बुद्धि तथा इन्द्रियों वाले मनुष्य के साधनों को समझाते हुए शरीर को जीवात्मा का घर बताया। तप तथा शुभ कर्मों के ज्ञान को वेदमन्त्रों से सिद्ध किया। परोपकार के शुभकर्मों से तथा शुद्ध मन से शुभ चिन्तन करने से योगी में प्रेम, उत्साह तथा सेवा का भाव जगता है। इसी कारण ऋषि मन, वचन व कर्म से अधर्म नहीं करते।

आश्रम के छात्रों ने उन्हें आसान आसन सिखलाये तथा आचार्य जी ने प्राणायाम की विधि भी बतलाई।

-नवीन आर्य, भऊ आर्यपुर, रोहतक

भजनोपदेशकों के लिए सभा से सम्पर्क करें—

प्रदेश की सभी आर्यसमाजें अपने आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव या अन्य विशेष कार्यक्रमों के लिए भजनोपदेशकों के प्रोग्राम सुनिश्चित करने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक से एक मास पूर्व पत्र द्वारा सम्पर्क करें।

—सभामन्त्री

thearyasamaj.org

माता, भगिनी और पुत्री के समान पवित्र गौ को घर में स्थान दो

❑ जगरूपसिंह छिक्कारा आर्य, म०नं० 1180, सै०-10-ए, गुड़गांव

गाय का परिचय-वेद-शास्त्रों में गौ-महिमा भरपूर है। गौ, ब्राह्मण, वेद, पतिव्रता देवियां, सत्यवक्ता, निर्लोभी और त्यागी इन सात के कंधों पर पृथिवी की प्रतिष्ठा रहती है। सृष्टि की मान-मर्यादा को सुरक्षित रखने वाली सात शक्तियों में गौ को प्रथम स्थान दिया गया है। भूमि पर टिकी हुई जीवन सम्बन्धी जो कल्पनाएं हैं, उनमें सबसे अधिक सुन्दर, सत्य, सरस और उपयोगी यह गौ है। देखने में भी गाय की आकृति पर करुणा, स्नेह, ममता का सागर और सात्त्विक बोलती प्रतीत होगी। सद्गुणों की प्रतिमूर्ति-सी सामने खड़ी दिखती है तो मनुष्य का चित्त हर्षविभोर हो जाता है। गाय मानव जाति के लिए सब समृद्धियों की खान है। गौ बिना ताज की महारानी है।

गाय के गुण-गाय का दूध मनुष्य का स्वास्थ्य स्थिर रखने में अमृत से कम नहीं है। दूध प्रकृति माता की एक स्वर्णिम देन प्राणधारियों को है, जिन उपायों से शरीर की गाड़ी स्वस्थ रहकर अपने मार्ग पर चलती जाये, वे सब ही पोषक तत्त्व दूध में विद्यमान रहते हैं। इनमें मुख्यत: पानी, प्रोटीन, चीनी, स्नेह और खनिज पदार्थ हैं जो मानव शरीर को बनाए रखने के प्रमुख साधन हैं।

मनुष्य के रोगी हो जाने पर स्वास्थ्य को फिर से ठीक-ठीक अवस्था में ले जाने की गौ के दूध में अद्भुत शक्ति है। मानव के शरीर सुडौल और सुन्दर बनाने वाली और पर्यावरण को स्वच्छ निर्मल बनाने वाली कामधेनु गाय है। गौ दूध बच्चों को जीवन, जवानों को स्वास्थ्य और वृद्धों को शक्ति प्रदान करने में 'एटमबम' सा है। इसमें रोगों को नष्ट करने की अपार शक्ति है। गाय के खाद की तो महिमा ही निराली है, वह जहाँ-जहाँ गया धरती को अन्न और धन से सम्पन्न करता चला गया। गौ भारतीय जीवन में रीड की हड्डी मानी गई है, जिसकी रक्षा और सेवा में हमारा सर्वस्व सुरक्षित है।

गाय का दूध और गाय का घी तो रसायन है। गोघृत में विषों के नाश करने की शक्ति है। यदि सर्प डस ले तो गोघृत-पान से विष का बड़ा भाग नष्ट हो जाता है। गौ का दूध रसवहा नाड़ियों को नहीं रोकता, स्निग्ध है, भारी रसायन है, रक्तपित्त दूर करता है, शीतल है, रस में विपाक में मीठा है, जीवनदाता है, वायु और पित्त को शान्त करने वाला है। कामधेनु दुधारू गौ अपने चारों स्तनों से दूध की धारा बहा देती है।

ऐसे जीवनदाता, रसायन, विष-नाशक गोदुग्ध और गोघृत छोड़कर गाय

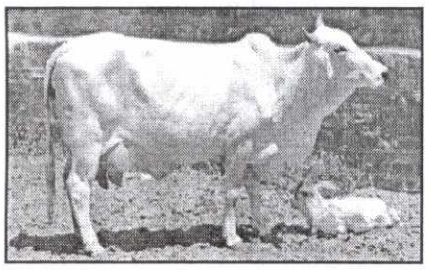

को घर-घर में न रखने से राष्ट्र का पतन हो रहा है। यह हमारा दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि आज हमारे घरों में गाय का पालन नहीं हो रहा है। अत: भारत की दशा को सुधारने के लिए गोमाता को घरों में स्थान दो।

गौ की दिव्यता की आंखों देखी सच्ची घटना-जिला रोहतक के गांव सांपला में नम्बरदार भगवाना के घर में यह घटना घटी। घटना संवत् दो हजार ग्यारह, कार्तिक अमावस्या, दीपावली की रात की थी। पड़ोस की किसी स्त्री ने अपने लिए पुत्र प्राप्ति की कामना से घर की छत फाड़कर मिट्टी का तेल छिड़ककर घर के अन्दर आग लगा दी। इस घर के बीच में एक गाय बंधी थी। अन्य कई बैल और गायें भी थीं। आग लगते ही घर में धुंआ भर गया। चारों तरफ से लोग दौड़े आए। गाय और बैलों के रस्से तेजी से काटे गये, खूंटे उखाड़े गये, परन्तु एक गाय जो जंजीर से बंधी थी और खूंटा मजबूत था, न उखड़ सका। गाय पर मिट्टी का तेल पड़ चुका था और उसके शरीर में आग लगने से वह गिर चुकी थी। प्राण निकलने से पहले मरते दम तक उसने माँ-माँ करते जोर से पुकारा। भगवाना ने इस गाय की माँ को 5 वर्ष पहले बेच दिया था जो चार मील दूर नयाबास गांव में रहती थी। घटना की खबर इसे कैसे लगी? प्रात:काल रस्सा खुलने पर वह दौड़ी आई और घटना स्थल पर पहुँच कर पुत्री को उत्सुकता से उस घर में ढूंढने लगी और सजल आंखों से हौरसने लगी। पड़ोसी उसके दृश्य को देखकर चकित रह गये कि उसने इतने दिनों के पश्चात् इतनी दूर रहते हुए भी किस प्रकार अपनी पुत्री को जान लिया। जीव भिन्न-भिन्न प्रकृति का होता है। पशु और पक्षियों को जितनी ज्ञान की आवश्यकता है, वह जन्म के साथ ही उन्हें प्राप्त हो जाता है, किन्तु उस ज्ञान का विकास वे नहीं कर सकते। वे कोई क्लास लगाकर अपना ज्ञान दूसरों में संक्रान्त नहीं कर सकते।

वेद-शास्त्रों में वर्णन मिलता है कि संसार में गौ के समान कोई वस्तु नहीं। गोदुग्ध को इतना हितकर समझ कर ही सनातन वैदिक संस्कृति के चार स्तम्भों में एक स्तम्भ 'गोवंश की वृद्धि' है। सृष्टि में जब से गोवंश का ह्रास होने लगा है, तब से रोग और दु:ख बढ़ गये हैं। शरीर को स्वस्थ और सुन्दर बनाये रखने के लिए परिवार में गौ रख लीजिये और फिर देखिये कि आपके लिए क्या हितकर है। गोपालन विश्व में सुख, शान्ति, समृद्धि और उन्नति प्राप्त करने का सच्चा वैदिक पथ है। सृष्टि की प्रजा (सन्तानों) का भूतल से लेकर द्युलोक तक कल्याण करने वाली कामधेनु गाय है।

महाभारत के शान्तिपर्व में लिखा है, भूलोक में 'अमृत' नाम का यदि कोई पदार्थ है तो वह गोदुग्ध है। गाय की सेवा से शारीरिक, आर्थिक, आध्यात्मिक और सभी प्रकार के लाभ हैं। देश के स्वास्थ्य और धर्म-धन का सहारा गोपालन ही है। संसार में गोधन के समान कोई धन नहीं है। गौएं लक्ष्मी (सम्पन्नता) की मूल हैं। पाप उन्हें छू तक नहीं गया। भारत की देवियां अपने सात्त्विक आशीर्वादों की जब बच्चों पर वर्षा करने लगती हुई कहती है—'दूधो नहाओ, पूतो फलो।' दयानन्द युग के पश्चात् आर्यसमाज पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से भी वैदिक संस्कृति की धूम मचा रहा है। आर्यों का प्रचार एक दिन ऐसा रंग लाएगा कि भारत का मानचित्र बदलकर राष्ट्र में दूध की नदियां बहने का युग प्रारम्भ होगा।

राज्यस्तरीय प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के वरिष्ठ व कनिष्ठ वर्ग में गुरुकुल की टीम ने अपनी प्रतिभा का मनवाया लोहा

कुरुक्षेत्र 10 नवम्बर, 2014। भारत विकास परिषद् द्वारा आयोजित **भारत को जानो** राज्यस्तरीय प्रश्नोत्तरी प्रतियोगीता के वरिष्ठ व कनिष्ठ वर्ग में गुरुकुल कुरुक्षेत्र की टीम ने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाते हुए प्रथम स्थान अर्जित किया। यह जानकारी गुरुकुल के प्राचार्य डॉ. देवव्रत आचार्य ने देते हुए बताया कि 9 नवम्बर को गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्रांगण में भारत विकास परिषद् की ओर से राज्यस्तरीय प्रश्नोत्तरी प्रतियोगीता आयोजित की गई जिसमें वरिष्ठ व वरिष्ठ वर्ग में गुरुकुल कुरुक्षेत्र की टीमों ने सर्वाधिक अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान पर कब्जा किया। वरिष्ठ वर्ग में 20 व कनिष्ठ वर्ग में 19 टीमों ने भाग लिया। प्राचार्य ने बाताया कि वरिष्ठ व कनिष्ठ वर्ग में प्रथम स्थान हासिल करने वाली टीम 26 से 28 दिसम्बर तक बनारस में आयोजित होने वाली राष्ट्रीय स्तरीय प्रश्नोत्तरी प्रतियोगीता में भाग लेगी। गुरुकुल प्रबंध कमेटी के प्रधान कुलवंत सिंह सैनी व प्राचार्य देवव्रत आचार्य ने प्रतियोगिता में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागीयों व प्रतियोगिता की तैयारी कराने वाले विज्ञान शिक्षक धर्मवीर सिंह को इस शानदार उपलब्धि के लिए बधाई व शुभकामनाएँ दीं। स्थानीय विधायक सुभाष सुधा ने विजेता टीम को ट्राफी व प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। इस अवसर पर कुरुक्षेत्र के नवनियुक्त विधायक सुभाष सुधा, रमेश सुधा, उप-प्राचार्य शमशेर सिंह सांगवान, भारत विकास परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष तरुण शर्मा के अतिरिक्त भारत विकास परिषद् के पदाधिकारीगण उपस्थित थे।

thearyasamaj.org

जय हरियाणा जय हिन्दुस्तान

हरियाणा के 10वें मुख्यमंत्री श्री मनोहरलाल खट्टर जी को शुभकामनाएँ

❑ कृष्ण वोहरा, सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, 641, जेल ग्राउण्ड, सिरसा

15 अक्तूबर 2014 को हरियाणा और महाराष्ट्र में विधानसभा के लिए चुनाव हुए। हरियाणा में मतदाताओं ने 76 प्रतिशत मतदान करके एक नया कीर्तिमान रचा है। लोकतन्त्र के प्रति विश्वास धीरे-धीरे बढ़ रहा है। इस चुनाव में स्पष्ट दिखाई दिया कि हरियाणावासी मत देने के अपने अधिकार के लिए कितने जागरूक है। प्रात:काल होते ही गांव और नगरों में पोलिंग बूथ के आगे लम्बी-लम्बी पंक्तियां बन गईं।

प्रात: 8 बजे से लेकर सायं 6 बजे तक शान्तिपूर्ण चुनाव चलता रहा। युवाओं ने मतदान में बढ़-चढ़कर भाग लिया। महिलाओं का जोश देखते ही बनता था। महाराष्ट्र में मतदान का प्रतिशत 64 प्रतिशत रहा।

हरियाणा में मतदाताओं को जागरूक करने में विद्यार्थियों ने बहुत योगदान दिया। गांव-गांव, नगर-नगर में स्कूल-कॉलेज के विद्यार्थियों ने बैनर हाथों में लेकर रैलियाँ निकाली। प्रत्येक जिले में प्रशासन की ओर बड़े- बड़े हार्डिंग लगाये गये जिन पर लिखा गया—क्या आप अपने वोट की कीमत नहीं समझते? आपके वोट से ही नई सरकार बनने वाली है। रेडियो, टेलीविजन तथा समाचार-पत्रों ने भी मतदाताओं को जागरूक किया। इसी कारण चुनाव के दिन 15 अक्तूबर को लोग वोट डालने के लिए अपने घरों से निकल पड़े।

हरियाणा में नए मतदाताओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। युवाओं ने अपने परिवार के सदस्यों को वोट डालने के लिए प्रेरित किया। ऐसा लगता है कि हरियाणा में लोकतन्त्र की जड़ें मजबूत हो रही हैं।

19 अक्तूबर को वोटों की गिनती सभी जिला केन्द्रों पर प्रात: 7 बजे प्रारम्भ हुई। केन्द्रों पर पुलिस का इतना जबरदस्त प्रबन्ध था कि पंछी भी पर नहीं मार सकता था। चुनाव परिणाम सायंकाल तक आ गए। परिणाम भी चौंकाने वाले थे। पहली बार भारतीय जनता पार्टी 47 सीटें जीतकर बहुमत में आ गई। इण्डियन नेशनल लोकदल एवं भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस क्रमश: दूसरे व तीसरे स्थान पर रहे। शान्तिपूर्ण ढंग से हरियाणा में सभी केन्द्रों पर वोटों की गिनती सम्पन्न हुई। कहीं कोई हिंसा नहीं हुई।

21 अक्तूबर को भाजपा ने चंडीगढ़ में सर्वसम्मति से श्री मनोहरलाल खट्टर को अपना नेता चुन लिया। अब 26 अक्तूबर को हरियाणा के 10वें मुख्यमंत्री के रूप में पंचकूला में मेला ग्राउण्ड में शपथ ली। वे करनाल से विधायक चुने गए हैं। उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक के रूप में लगभग 20 वर्ष कार्य किया। फिर वे भाजपा के संगठन मंत्री (हरियाणा प्रदेश) बन गए। लगभग 10 वर्षों तक कार्य किया।

इस प्रकार संघ के समर्पित कार्यकर्त्ता श्री मनोहरलाल खट्टर हरियाणा के 10वें मुख्यमन्त्री होंगे। उनको हरियाणावासियों की ओर से शुभकामनाएं।

बिना विचारे कोई कार्य न करें.... पृष्ठ 2 का शेष....

कार्य बहुत कम हैं। देश के विकास से विकास कार्यों में लगे लोग देश से अपना विकास अधिक कर रहे हैं, ऐसा देखने में आ रहा है। कालिजों और विश्वविद्यालयों में भी राजनीति और विद्यार्थी भी चुनाव में वह सभी हथकण्डे अपनाते हैं जो विधानसभा या लोकसभा के चुनावों में हमारे नेता अपनाते हैं।

विद्याग्रहण के समय राजनीति का विषय पढ़ाना तो उचित है, परन्तु विद्यार्थियों में चुनावों के दौरान पार्टीबाजी जोर पकड़ जाती है और बहुत-सा खून-खराबा भी होता है जो विद्यार्थी किसी जुर्म में पकड़ा जाता है, उसका तो भविष्य खत्म-सा हो जाता है। विद्याग्रहण करने तक कोई राजनीति नहीं होनी चाहिए, विद्याग्रहण के पश्चात् जो राजनीति में जाने का इच्छुक है वह जाये। देश की कितनी फोर्स चुनावों के समय कालिजों आदि में लगाई जाती है।

देश के विद्यार्थियों को वह शिक्षा नहीं दी जा रही जिससे उनके चरित्र का निर्माण हो। डॉक्टर, इंजीनियर का निर्माण तो हो रहा है, परन्तु चरित्रहीन क्या करते हैं? वह सब देशवासी नित्य टी.वी. पर देख रहे हैं। जनता को उनकी सोच बदलने की आवश्यकता है। देश को बचाना है, तो अपनी सोच को बदलो और बिना विचारे कार्य करना बन्द कर दो।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार में ओरियेन्टेशन ट्रेनिंग प्रोग्राम

हरिद्वार। "आज के चिकित्सा जगत में योग की नितान्त आवश्यकता महसूस की जाने लगी है, क्योंकि एलोपैथ की दवाईयां जो कुछ समय तक ठीक प्रभाव करती है वहीं दवाइयां या तो नुकसान करने लगती हैं अथवा प्रभावहीन हो जाती है।" गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में आयोजित होने वाले 6 दिवसीय आयुर्वेदिक डॉक्टर के लिए ओरियेन्टेशन ट्रेनिंग प्रोग्राम के उद्घाटन सत्र में अखिल भारतीय मोरार जी देसाई योग संस्थान के निदेशक डा. ईश्वर वास्वारेड्डी मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि प्राचीन भारतीय योग पद्धति में आहार-विहार की शुद्धता पर बल देकर योग द्वारा बिना दवाइयों के ही रोगी को ठीक करने की बात की गई है। यदि योग के मूल सिद्धांतों को समझकर अभ्यास किया जाए तो उससे शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक शुद्धि कर मनुष्य सच्चिदानंद परमात्मा का साक्षात्कार कर सकता है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष कुलपति डा. सुरेन्द्र कुमार ने कहा कि हमारे समाज की अवधारण में डाक्टर भगवान का प्रतिरूप माना गया है। जिस प्रकार भगवान जीवन देता है और रक्षा भी करता है उसी प्रकार की स्थिति डाक्टर की होती है ऐसे में उसकी जिम्मेदारी भी बढ़ जाती है। आजाद भारत में हम एलोपैथी की आंधी में अन्य चिकित्सा पद्धतियों को भूल गए हैं जबकि इससे पूर्व हमें आयुर्वेद एवं योग ने ही जीवन दिया है। आज पुनः योग की आवश्यकता है। कुलपति ने कहा कि डाक्टर की ईमानदारी भी श्रेष्ठ बनती है। आज नैतिकता और सद्व्यवहार की अत्यन्त आवश्यकता है। अच्छे व्यवहार से और ईमानदारी के साथ किए इलाज से रोगी शीघ्र ठीक होता है। उन्होंने कहा कि प्राचीन पद्धति में शिक्षक एवं वैद्य को शुल्क नहीं लेने के लिए निर्देशित किया गया था, लेकिन आज सब कुछ बाजारवाद में खो गया है। उन्होंने कहा कि नैतिकता को बनाए रखाने की अत्यन्त आवश्यकता है।

विशिष्ट अतिथि डा. अरुण कुमार त्रिपाठी निदेशक उत्तराखण्ड आयुष विभाग ने कहा कि योग एवं आयुर्वेद, का समवाय संबंध है ये दोनों एक दूसरे के पूरक हैं और दोनों का उद्भव वेदों से हुआ है। उन्होंने कहा कि जीवन पद्धति के बिगड़ने के कारण ही आज रोगों की अधिकता देखने में आती है। योग मनुष्य की जीवन पद्धति को सुधारने का श्रेष्ठ उपचार है।

"जीवन में योग की अत्यन्त आवश्यकता है। दीर्घकालीन जीवन आनंद के साथ जीया जाए तो योग अपना होगा।" गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के मानव चेतना एवं योग विभाग में चल रहे 6 दिवसीय आयुर्वेदिक डॉक्टर्स के ओरियेन्टेशन ट्रेनिंग प्रोग्राम में दूसरे दिन बरकतुल्ला विश्वविद्यालय भोपाल म.प्र. की योग विभागाध्यक्ष डा. साधना दौनिरिया प्रशिक्षुओं को संबोधित कर रही थीं।

उत्तराखण्ड आयुषविभाग के निदेशक डा. अरुण कुमार त्रिपाठी ने कहा कि हृदय रोगों से बचने के लिए योगाभ्यास अत्यन्त महत्वपूर्ण उपाय है। प्रो. ईश्वर भारद्वाज ने प्रशिक्षुओं को विभिन्न यौगिक आसनों के शरीर पर पड़ने वाले प्रभाव से अवगत कराया।

कार्यक्रम में विशिष्ट रूप से डॉ. आर.सी. दुबे, प्रो. सुभाष वेदालंकार, प्रो. विवेकी, डा. आर.के.एस. डागर, प्रो. राजेन्द्र अग्रवाल, प्रो. एल.पी. पुरोहित, प्रो. सत्यदेव निगमालंकार, श्री नलनीश विग, प्रो. प्रभात सेंगर, डा. प्रदीप कुमार जोशी, कर्नाटक, त्रिपुरा, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, राजस्थान तथा हरियाणा प्रान्त से आए आयुर्वेद के डाक्टर, डा. सुरेन्द्र त्यागी, डा. राकेश गिरी, डा. उधमसिंह आदि उपस्थित थे।

-डॉ. प्रदीपकुमार जोशी,
जनसंपर्क अधिकारी

thearyasamaj.org

राष्ट्रीय स्तर पर छाया आर्य बाल भारती

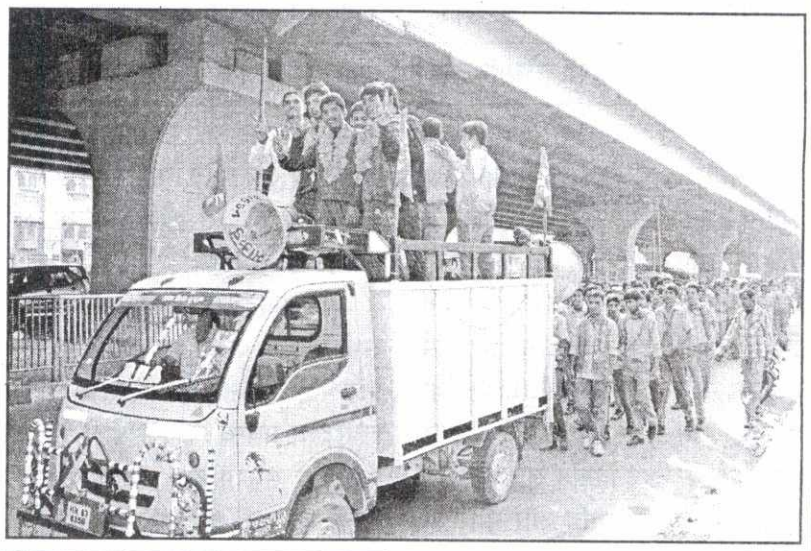

29 अक्तूबर से 1 नवम्बर 2014 तक गोवा, महाराष्ट्र में आयोजित 27वीं अण्डर-19 तथा 16वीं अण्डर-17 राष्ट्र स्तरीय रस्सा कशी प्रतियोगिता में अण्डर-17 आयु वर्ग में हरियाणा की टीम प्रथम तथा अण्डर-19 में द्वितीय स्थान पर रही। इस प्रतियोगिता में अण्डर-19 आयु वर्ग में आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल पानीपत के दो छात्रों मोहित दहिया तथा मोहित पंवार तथा अण्डर-17 आयु वर्ग में अनुज जागलान ने हरियाणा की टीम का प्रतिनिधित्व किया। तीनों विद्यार्थियों की इस उपलब्धि पर विद्यालय के विद्यार्थियों में खुशी का वातावरण छा गया व पूरा स्टाफ गर्व से भर गया। डी.पी. जगदीश चहल की अगुवाई में विद्यालय के छात्रों ने रेलवे रोड से लेकर विद्यालय तक विजेताओं के गले में फूल-माला डालकर, ढोल बजाते हुए तथा जयकारे लगाते हुए सम्मान यात्रा का आयोजन किया। डी.पी. जगदीश चहल ने बताया कि मुकाबला कड़ा था। अण्डर-19 आयु वर्ग में 13 मैच अण्डर-16 में 12 मैचों में प्रतिस्पर्धा के बाद विद्यार्थियों को विजेता बनने का गौरव प्राप्त हुआ। इस अवसर पर कार्यकारिणी के प्रधान आजाद आर्य, प्रबन्धक रमेश मलिक ने सबको बधाई दी।

पी.टी.आई. संदीप आर्य, आचार्य राजकुमार शास्त्री आदि उपस्थित रहे। यह सूचना प्रिंसिपल रेखा शर्मा सभी स्टाफ को दी।

—प्रिंसिपल, आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल पानीपत

अंग्रेजी में शपथ लेना राष्ट्रभाषा की अवहेलना

राष्ट्र निर्माण परिषद् की एक आवश्यक बैठक दिनांक 5.11.2014 को छोटूराम धर्मशाला पार्क रोहतक में डॉ. जगदेवसिंह की अध्यक्षता में हुई। बैठक में प्रस्ताव पारित कर हरियाणा विधान सभा के उन विधायकों की निंदा की गई जिन्होंने विधानसभा में अंग्रेजी में शपथ ली। हरियाणा में ''हरियाणा राजभाषा अधिनियम 1969'' के अनुसार हिन्दी में सभी कार्य करना अनिवार्य है। भारतीय संविधान के अनुसार भी हिन्दी भाषी प्रान्तों में शत-प्रतिशत कार्य हिन्दी में करने का प्रावधान है। जब विधान बनाने वाले विधायक ही विधान का पालन नहीं करेंगे तो अन्य व्यक्ति या संस्था से क्या आशा हो सकती है? राष्ट्रभाषा, राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगान आदि उच्च राष्ट्रीय प्रतीकों को महत्त्व व सम्मान देना प्रत्येक नागरिक का प्रथम कर्त्तव्य है। ये सम्माननीय विधायक पूरे दिन हिन्दी बोलते हैं लेकिन एक महत्त्वपूर्ण अवसर पर इन्होंने राष्ट्रभाषा को महत्त्व न देकर पराधीनता की प्रतीक बनी अंग्रेजी का झंडा ही ऊँचा किया है। अंग्रेजी सीखने या जानने से किसी को राष्ट्रभाषा की अवहेलना का अधिकार नहीं मिल जाता। अंग्रेजी एक साधन या नौकरानी है उससे जरूरत के अनुसार काम ले सकते हैं लेकिन उसे सिर पर बैठाना उचित नहीं है। सिर के सिंहासन पर तो माँ रूपी भाषा ही सुशोभित होगी। विकसित देशों में अपनी भाषा को पूर्ण महत्त्व दिया जाता है। फ्रांस में आवश्यक रूप से प्रयुक्त एक भी अंग्रेजी शब्द पर तीन हजार रुपये दण्ड है, लेकिन भारत के स्वाभिमान को कुछ नागरिकों ने मिट्टी में मिला दिया है।

बैठक में मानव की प्रथम व विश्व की सर्वोत्तम देवभाषा संस्कृत तथा मातृभाषाओं हिन्दी व पंजाबी में शपथ लेने वाले माननीय विधायकों को बधाई दी गई तथा उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की गई। ऐसे विधायक देश का मर्म समझने में सक्षम होते हैं। परिषद् ने शिक्षा में अंग्रेजी थोपे रखने का विरोध किया है। **—महावीर 'धीर' सचिव**

दुनिया में बजेगा हिंदी का डंका

आगरा। पूर्वोत्तर के राज्यों समेत देश के हर हिस्से में केंद्रीय हिंदी संस्थान से जारी होने वाली डिग्री कोर्स को मान्यता दी जाएगी। केन्द्रीय संसाधन विकास मंत्रालय ने इस आशय के आदेश जारी कर दिए हैं। यह जानकारी मानव संसाधन विकास मंत्री स्मृति ईरानी ने दी। उन्होंने कहा, 'हिन्दी की बिन्दी अब दुनिया में चमकेगी।'

केन्द्र सरकार हिन्दी को वैश्विक स्तर पर फैलाने को जोरदार कसरत करने जा रही है। इसके लिए दुनिया के कई देशों में केन्द्रीय हिंदी संस्थान के केंद्र खोले जायेंगे। हिंदी को बढ़ावा देने वालों को केन्द्र सरकार सम्मानित करेगी। इसके लिए तीन नए पुरस्कार शुरू किये जा रहे हैं। पूर्वोत्तर राज्य के करीब 45 छात्र-छात्राओं ने प्रवीण (बीटीसी के समकक्ष), पारंगत (बीएड के समकक्ष), निसषथ (एमएड के समकक्ष) डिग्री की मान्यता न होने की केन्द्र मंत्री से शिकायत की। छात्राओं का कहना था कि हाल ही में निकले शिक्षक पदों के लिए केन्द्रीय हिंदी संस्थान की डिग्रियों को अमान्य ठहराया गया है। इससे उन्हें हिन्दी सीखने के बाद भी शिक्षक की नौकरी नहीं मिल सकती है। इस पर स्मृति ईरानी ने कहा कि सरकार ने आदेश जारी कर दिया है। पूर्वोत्तर राज्यों में हिन्दी संस्थान की तीनों डिग्रियां मान्य होंगी।

(साभार-दैनिक जागरण, 7.11.14)

सत्यार्थप्रकाश

समाज में फैले अन्धकार, अन्धविश्वास, गुरुडमवाद, भ्रूणहत्या आदि बुराइयों को मिटाने के लिये सत्यार्थप्रकाश हरयाणा के प्रत्येक घर तक पहुंचाने का यत्न किया जाये।

—आचार्य बलदेव

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक मा० रामपाल आर्य ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।